चतुर्थ अध्याय

''''पाँच आँगनों वाला घर' का शिल्पगत अनुशीलन''

चतुर्थ अध्याय

''‘पाँच आँगनों वाला घर’ का शिल्पगत अनुशीलन''

- प्रास्ताविक

4.1 शिल्प का अर्थ

4.2 शिल्प का स्वरूप

4.3 शिल्प की परिभाषा

4.4 उपन्यास की शिल्पविधि

4.5 शिल्प के विविध अंग

4.5.1 भाषा

4.5.2 भाषा से संबंधित विविध रूप

4.5.2.1 तत्सम शब्द

4.5.2.2 तद्भव शब्द

4.5.2.3 आँचलिक शब्द

4.5.2.4 अँग्रेजी शब्द

4.5.2.5 विदेशी शब्द

4.5.2.6 मुहावरे

4.5.2.7 अलंकारिक वाक्यों का प्रयोग

4.5.2.8 लोकोक्तियाँ

4.5.2.9 सुभाषित

4.6 वस्तुशिल्प

4.7 चरित्र चित्रण

4.8 कथोपकथन

4.9 देशकाल और वातावरण

4.10 उद्देश्य

4.11 भाषा तथा शैली

4.12 विविध शैलियों का प्रयोग

4.12.1 वर्णनात्मक शैली

4.12.2 मनोविश्लेषणात्मक शैली

4.12.3 पूर्वदिप्ती शैली

4.12.4 ऐतिहासिक शैली

4.12.5 आत्मकथात्मक शैली

4.12.6 पत्रात्मक शैली

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

''‘पाँच आँगनों वाला घर’ का शिल्पगत अनुशीलन''

❑ प्रस्तावना -

शिल्प ही रचना को सही आकार देता है। जिस प्रकार कोई कलाकार अपनी कलाकृति का निर्माण करने के लिए कलाकारी के उपकरणों को उपयोग में लाता है। उसी प्रकार साहित्य निर्माण के लिए शिल्प से संबंधित कई उपकरणों की आवश्यकता होती है। शैल्पिक सौन्दर्य के कारण ही रचनाकार की कृति अधिक आकर्षक बन जाती है। लेखक के मन में सबसे प्रथम शिल्प का ही विचार आता है और उन्हीं विचारों से प्रेरणा लेकर वह अपने रचना शिल्प की निर्मिती के लिए जूटता रहता है। रचना सृष्टि को सही प्रविधि में बाँधना शिल्प है। रचना प्रक्रिया कि विशिष्ट पद्धति ही शिल्प है। शिल्प के बिना उपन्यास को सही आकार प्राप्त नहीं हो सकता। शिल्प उपन्यास की जान होता है। ‘पाँच आँगनों वाला घर’ का शिल्पगत अनुशीलन करने के लिए शिल्प का स्वरूप अर्थ परिभाषा के साथ-साथ इसका लौकिक विवेचन करना आवश्यक होता है।

4.1 शिल्प का अर्थ :

‘संस्कृत ग्रन्थ ‘उणादि कोश’ के अनुसार ‘शिल्प’ शब्द शीलसमाधौ धातु से ‘प’ प्रत्यय और शील को ऱ्हस्व लगाकर बनता है। वी.एस. आप्टे के मतानुसार इस शब्द की व्युत्पत्ति शिल+पक्। अमरकोश में शिल्प को ‘कर्मकलादिकम’ ऐसा कहा है। हलायुधकोश में इसका अर्थ ‘क्रिया कौशलम्’ के रूप में दिया है। अंग्रेजी विद्वान सर मौनिअर विलियम्स ने शिल्प के अनेक अर्थ इस प्रकार दिये है।

1) कलात्मक कार्य.
2) कोई भी हस्तकला, यांत्रिक या ललित कला (65 कलाएँ)
3) काव्य संगीत, अभिनय, नृत्य आदि
4) किसी भी कला, शिल्प तथा कलाकार्य में कौशल
5) रूप, आकृति [1]

‘शिल्प विधि अथवा रचना पद्धति के लिए अंग्रेजी में टेकनिक (Technique) शब्द का व्यवहार होता है। टेकनिक के अतिरिक्त अंग्रेजी में मेकनिक्स (Mechanics)

सेटिंग (Setting), आर्टिस्ट्री (Artistry), कन्स्ट्रक्शन (Construction), तथा (Design) का भी प्रयोग शिल्प विधि के लिए किया जाता है।[2]

हिन्दी के कई विद्वानोने अँग्रेजी के 'टेकनिक' शब्द को हिन्दी के शिल्पविधि, रचना प्रणाली, प्रविधि, तंत्र आदि शब्दों के लिए टेकनिक शब्द को अपनाया है किंतु कुछ विद्वानों के इस संबंधि जो मत है वह इसप्रकार है।

'मौनिअर विलियम्स, वी.एस. आपटे, डॉ. रघूवीर, डॉ. कमलकिशोर गोयनका आदि अनेक आचार्यों ने 'शिल्प' शब्द का अंग्रेजी पर्याय क्राफ्ट को माना है। साहित्य में 'शिल्प'और 'क्राफ्ट' दोनो के व्यापक एवं संकुचित अर्थ समान रूप से मिलते है। और दोनों भाषा के साहित्य में 'कौशल्यपूर्ण रचना' के अर्थ में उनका प्रयोग हुआ है।'[3]

'शिल्प इस शब्द के 'क्राफ्ट' इस शब्द को उचित कहा जाता है किंतु संशोधन तथा अलोचना के जगत् में 'टेकनिक' शब्द ही अधिक प्रयुक्त हुआ है। हिन्दी 'शिल्प' शब्द के लिए अंग्रेजी 'टेकनिक' शब्द के रूप में उचित हुआ है।'[4]

इसी प्रकार 'टेकनिक' यह शब्द हिन्दी के शिल्प शब्द का अर्थ दिखाता है।

4.2 शिल्प का स्वरूप :

उपन्यास को अधिकाधिक आकर्षक बनाने के लिए उसमें 'टेकनिक' तथा शिल्प का होना अनिवार्य है। उपन्यास का सही आकार, प्रकार, विशेषता, और विशिष्टता भी शिल्प के कारण ही बन पाती है। रचना सृष्टि का मूल्य शिल्प से ही जाना जाता है। शिल्प का स्वरूप उसकी रचना प्रक्रिया तथा उपन्यास के आकार विषयवस्तु और कथ्य पर निर्भर रहता, है इस संबंध में डॉ. त्रिभुवन सिंह के विचार इसप्रकार है - 'उपन्यास रचना एक कला है और उपन्यासकार एक कलाकार। अत: शिल्प के प्रति असजगता उसे असफलता की ओर ले जायेगी। किसी भी प्रकार का असन्तुलन कृति को नष्ट कर सकता है। शिल्प के प्रति आग्रह उसी सीमा तक स्वीकार्य है, जिस सीमा तक कि वह वर्ण्य विषय के विषय औचित्य को नष्ट नहीं करता है।'[5]

'विषय वस्तु को कला रूप में ढालने (या उसके ढल जाने) की प्रक्रिया को शिल्प-विधि कहते हैं। यहाँ मूलवस्तु से हमारा तात्पर्य विभिन्न उपर्युक्त विद्वानों द्वारा कथित उद्देश, मूल संवेदना या प्रेरणा, आदर्श, जीवन-दृष्टिकोण, विषयवस्तु आदि तत्वों

(intention motive idea point of view situation theme etc.) की समष्टि से है - वह अनुभूति या जीवन जो अभी सृजनात्मक कल्पना से अविघायित (unprocessed) है। इस कोरे वस्तु तत्व को विभिन्न पद्धतियों से ढाल दिए जाने के बाद जब आस्वास्थ्य स्वरूप मिल जाता है। तब वह कलारूप बन जाता है इस स्वरूप तक पहुँचाने की प्रक्रिया इसमें प्रयुक्त उपकरणों के अन्तरावलम्बित विविध उपस्थापन ही शिल्पविधि है।'[6]

''जहाँ तक शिल्प का सवाल है गोविन्द मिश्र ने उन तमाम कलात्मक युक्तियों का उपयोजन किया है जो साहित्यिक व्यापार में व्यवहृत है। मसलन स्मृत्यावलोकन काल के साथ क्रीडा, अतीत को वर्तमान में लाना, विभिन्न पात्रों की मानसिकता के बिन्दूओं से अनुभव का कथन, नाट्यात्मक निवेदन कभी चरित्र के बाहर से वर्णन तो कभी दूसरे चरित्रों की दृष्टि से घटना, प्रसंग, व्यक्ति का बयान, कभी प्रसंग की चित्रपट की तरह दृक-प्रतीति देते हुए प्रस्तुत करना तो कभी अपनी ओर से नेरेशन करना, कभी आत्मगत अनुभव का कथन करना, तो कभी दूसरों के द्वारा निवेदन। कहीं मानसिक विघटन के बिन्दू पर वाक्यों में बिरवराव, व्याकरण की दृष्टि से कहीं स्खलन भी परंतु कलात्मक दृष्टि से सोद्देश्यता - ये सारे शिल्पगत कौशल हिन्दी उपन्यास विधा में रूढ़ हो गए हैं। गोविन्द मिश्र उनका उपयोग अनुभव की शाक्तिशाली अभिव्यक्ति के कोण से करते है। समन्वय के समर्थक हैं, अतिरेक, अविवेक और प्रदर्शनी के खिलाफ हैं तो वे शिल्प के कथ्य पर हावी नहीं होने देते।''[7]

4.3 शिल्प की परिभाषा :

शिल्प अंग्रेजी शब्द 'टेकनिक' का हिंदी अनुवाद है। इसकी परिभाषा अंग्रेजी शब्द कोश मे शब्दो में दी गई है।[8] कलात्मक कार्यवाही की रीति जो संगीत अथवा चित्रकला में प्राप्त होती है। तथा कलात्मक कारीगरी इससे मिलती-जुलती परिभाषा हिन्दी कोश में इस प्रकार दी गई है।[9] शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तकारी या कारिगरी से है।

''शिल्प के माध्यम से ही हम काव्य, महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक, गीत, आख्यान, नाटक, एकांकी कहानी और उपन्यास के अंतर को समझ पाते हैं। अत: साहित्य के प्रकारों का निर्धारण शिल्प के माध्यम से ही होने के कारण पाठकों के लिए इसकी अनिवार्यता सर्वाधिक बढ जाती है। पाठकों की भी अपनी पाठनाभिरूचि होती है जिसके

अनुसार वे विशेष साहित्य रूप का ही अध्ययन करना चाहते हैं। अत: शिल्प पाठकों की अभिरूचि के अनुसार साहित्य के चुनाव में सहायता पहुँचाता है।''[10]

इसी प्रकार साहित्य को विशेष वर्ग में रखने के लिए शिल्प ही सहायता करता है। शिल्प के कारण ही हम साहित्य के प्रकार को समझ पाते हैं।

प्रस्तुतिकरण करते समय उसका स्वरूप किस तरह होना चाहिए उसके कौन से टेकनिक की आवश्यकता है। यह सब शिल्प के प्रयोग से स्पष्ट होता है। शिल्प संबंधी सतर्कता आवश्यक होती है।

4.4 उपन्यास की शिल्पविधि :

उपन्यास की शिल्पविधि उपन्यासकार के दृष्टिकोण पर निर्भर होती है। इस संबंध में पर्सि ल्युबक का कथन सही है कि - ''उपन्यास काल की शिल्पविधि अथवा कारीगरि की जटिलता का निर्धारण मूलत: कथाकार के दृष्टिकोन पर निर्भर है। कथाकार का कथा के साथ जो दृष्टि पात्रक सम्बन्ध होता है, वही आखिर में उपन्यास में शिल्प निर्धारण करता है।''[11]

उपन्यास का शिल्प निर्धारित करने का प्रथम कार्य उपन्यासकार में होता है। जीवनानुभवों की अनुभुति लेने के पश्चात उपन्यासकार के मन में जो कल्पना आने लगती है, उस कल्पना का प्रारूप सबसे पहले उसके मन में आने लगता है और उसीके अनुसार वह अपनी रचना प्रक्रिया का निर्माण करता है। उपन्यास कार के मन में सबसे पहले एक विशिष्ट शिल्प दिखायी देता है और उसके अनुसार कथावस्तु पात्र चरित्र चित्रण, वातावरण निर्मिती होती है उसके बाद उपन्यास कार अपनी भाषा शैली के साथ-साथ उद्देश्य को सामने रखकर उपन्यास का निर्माण करता है। उपन्यास के तत्वानुसार उपन्यास की निर्मिती, उपन्यास की शिल्प विधि निश्चित होती है। उपन्यास की शिल्प विधि सबसे महत्वपूर्ण होती है।

मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का शिल्प उपन्यास के तत्वों के अनुरूप बन पड़ा है। उपन्यास में कथावस्तु, पात्र तथा चरित्र चित्रण, देशकाल वातावरण आदि में सजीवता दिखायी देती है। इस सजीवता की ओर देखने से ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कि शिल्प बनाने वाला कलाकार मुर्ति बनाते समय जिस प्रकार अपनी कारीगिरी

को आत्मसात करता है जिसके कारण पत्थर की मुर्ति भी जीवित मनुष्य की तरह प्रतिभासित होती है उसी प्रकार शिल्प की ओर देखने से पारिवारिक चित्रण अत्यंत सजिव लगता है। उपन्यास में भाषिक प्रयोग के कारण बनारस की बोली, दिल्ली, मुंबई, नागपुर और फिर अंग्रेजी प्रभाव से बनी बोली भाषा को मिश्र जी अत्यंत सहजता से लिखते जाते है। लेखक की दृष्टि से भाषा का स्त्रोत शिल्प के सौन्दर्य को बढ़ाता है। इसलिए शिल्प का पहला महत्वपूर्ण, अंग भाषा है। भाषा की विविधता, शब्द, वाक्य, मुहावरें और भाषिक तत्वों पर आधारित व्याकरण के कारण शिल्प में साहित्यिक तंत्र आते है और साहित्यकार के टेकनिक संबंधित विचारोंकि प्रचिती होती है।

किसी वस्तु को बनाने या रचने का ढंग अथवा रचना प्रक्रिया के समुच्चय को शिल्प विधि कहा जा सकता है। यह साहित्यकार और पाठक के बीच की कडी है। हर कलाकार अपनी रचना के लिए शिल्प का आश्रय लेता है और प्रतिभानुसार सफलता प्राप्त करता है। इसके द्वारा रचनाकार अपने विषय का अनुसंधान और विकास करता है। ''शिल्प विधि एक माध्यम है जिसके सहयोग से कोई भी रचनाकार अपना कथ्य कहने के लिए उद्धृत होता है। उसके लिए वह अपनी सुविधानुसार कथा, पात्र कथोपकथन, शैली वातावरण अपने तरीके से जोड़ तोड़कर प्रस्तुत करता है। यह एक सापेक्ष परिवर्तनशील प्रक्रिया है ।''[13]

शिल्प गौण अथवा बाह्य उपकरण न होकर कथा साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण और आंतरिक प्रक्रिया है। साहित्य में इसका अस्तित्व अनिवार्य है। उपन्यास के शिल्पगत अनुशीलन करने के लिए उपन्यास के तत्वों के अनुसार और शिल्प निर्माण के लिए आवश्यक बातों की ओर ध्यान दिया जाता है।

4.5 **शिल्प के विविध अंग :**

4.5.1 **भाषा -**

शिल्प के निर्माण में भाषा का अधिक योगदान रहता है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में मिश्र जी ने विविधता से भाषा का प्रयोग किया है। भाषा की बुनावट आवश्यकतानुसार बनायी गयी है। भाषा में शब्दों के सामर्थ्ये का अधिक्य दिखायी देता है। शब्दों में लयात्मकता और संगीतात्मकता के कारण कही कही पर शिल्प में काव्यात्मकता

की झलक दिखायी देती है। इस उपन्यास में देशी, विदेशी, अंग्रेजी, उर्दु, आदि शब्दों का प्रयोग किया है। तत्सम, तद्भव शब्दों के साथ-साथ मुहावरे लोकोक्तियाँ आदि का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।

"भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है भाषा के माध्यम से साहित्यकार अपने युग को प्रतिबिंबित करता है। वह पाठकों से संबंध स्थापित कर भाषा को समृद्ध बनानें का प्रयास करता है। हर युग में भाषा में परिवर्तन होता रहता है। दो लेखकों की भाषा में परिवर्तन तो दिखायी देता है। कथा साहित्य की भाषा सरल, सजीव और पाठकों को अपनी ओर आसानी से प्रेषित करनेवाली होनी चाहिए। उसमें एक ओर सहज प्रवाहमयता हो जो दूसरी ओर सूक्ष्म एवं गहरे विचार भी अंकित हो।"[14]

भाषा को प्रभावात्मक बनाने के लिए शिल्प विधि में विविध प्रयोग किए जाते है।

4.5.2 **भाषा से संबंधित शब्दों के विविध रूप -**

4.5.2.1 **तत्सम शब्द :-**

पूजा-पाठ, गृहस्थ, परिक्रमा, कार्तिक-स्नान, प्राचीन, संक्रान्ति, तिरस्कृत, प्रकृति, प्रार्थना, प्रतिष्ठित, निमन्त्रण, केन्द्रबिन्दु, स्वतंत्रता,-आन्दोलन, गृहस्थ, कर्म, धर्म, संकीर्णता, अन्त:प्रेरणा, भाग्य, स्पर्श, अश्वस्त, परिवर्तन, मन्दिर, अनिवार्य, जीवन-निर्वाह, रेष्ठ, ब्राम्हमुहुर्त, स्थितप्रज्ञ, दर्शन, प्रीतिभाव, मातृत्व, संस्कृति, पूर्वार्ध्द, परिश्रम, आकांक्षा आदि।

4.5.2.2 **तद्भव शब्द :-**

टट्टी-दतुअन, चाँद, गड्मड्ड, सौम्यता, सौभाग्य, नक्षत्र, हितेंषी, घिस-घिसवाली, शत-प्रतिशत, टुकुर-टुकूर, छिपाना।

4.5.2.3 **आँचलिक शब्द :-**

मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में उन्होंने जगह-जगह पर आँचलिक शब्दोंका प्रयोग किया है। टट्टी-दतुअन मै या तारे, दुआरे, अइसन, कछू, साँच, बचवा, तोहरै, रुकला, ऊ, बनवास, निर्दोस, कऊन, रजवा, उठाइ, मलेच्छवा,

मुँहुआँ, गुड खडहा घी, पापड, दही, आचार, उडद की दाल, लड्डू, राउर लडिका माँझा, संक्रान्ति, उनहीं अईसा, दुलार, राखत, बिरोध-विरोध, देश-बिदेश, मयानी, खपरैल, भरभराय, फलनवा, ढिकनावा, उठापटक, बा, लरिका, बँधियाँ, भौय-भोय, ससुरे, कक्का, नाहिं, भूखल, रहलीं, लोगन, जगाईं, जाइब, इहा, बहिरे खुखुर-खुखुर, रउवा चिक-चिक, चिख-चिख, तिक-तिडिंग, चिचि-चिया, चिचि-चि, कुटोक, कुओक-कुकडूँ-कूँ, कुलबुलाहट, चहचहाट, मुँह दिखाई, हव्वन, लौहरी, लंहेगा, करधनी।

4.5.2.4 **अंग्रेजी शब्द :-**

''स्कूल, हैड मास्टर, क्लास, हॉल, फुलिश, फैलो, हाऊ डेअर, केनिंग, सौरी, माई, बॉय, हिज, मैजेस्टी, पोइम, आर्ट सीरिअस, गुड लक, योर, कंट्री इंग्लैंड, फासिज्म, युनिवर्सिटी, अंडरग्राऊंड, कम ऑन, लेक्चर, पॉप म्युझिकस, कॉमिक्स, थिलर्स ड्राइंग रुम, ऑफ डेट, ओल्ड फैरांड, डिविजन, कल्चर डिफीटिस्ट मैंटलिटी, क्वसचन, डिपौंड्स, सैटिस्फैकशन, एव्हरी थिंग, गोइंग, फाइन, सीटीजन, एडवटाईसिंग, जर्नलिस्टर, प्रोफेशनल, रिटर्डिड रिलैक्स, व्हील्स, कीप, क्वाइट, समथिंग, इनडिपैंडेंट, एस्ट्रा औडीनरी, फिलौसफी, सैलेब्रेट, डिक्टेट, लाइफ, इंडविजुअल, मेडिकल कानफ्रेंस, पर्सनल, जस्टीफिकेशन, बिहेबियर।

4.5.2.5 **विदेशी शब्द :-**

तरकीब, मुलायम, सुबह, माहौल, औरत, बुजुर्ग, शामिल, फिसल, रोशीन मोहल्ला, सख्त, मुशायरा, मुजरा, मौका, मामूली, नौकर, नाश्ता, मुस्तकिल, मुस्कुराहट, तखल्लुस, आमिल, चाँद महफिल, कलाम, शायर, गुस्ताखी, खातिरदारी, हाजत, शातिर आल्लाह, कुदरत, आसमान, खासियत तवायफ, तर्जुमा, मुशायरा तकरीरे, जंजीरें, सुर्खी, बेनूर, सुल्ताँ, मौजूद, फिजाँ, फुर्सत, खबियाँ, खूबसूरत, तनख्वाह, इत्मीनान, जश्न, दर्द, हजरत, फोर्रन, हलफनामा, मुवक्किल, हिदायत, जुनून, हिफाजत मक्सद, शरीक, किफायत, परहेज, मसलन, बिखेर, मुस्तकिल, कश्मकश, इस्तेमाल, ताज्जुब, मुकर्रर,[17] आदि।

मिश्र जी के इस उपन्यास में विभिन्न प्रकार के शब्दों को उपयोग में लाया गया है। जो शिल्प की दृष्टि से आवश्यकतानुसार पिरोय गय है। जिससे कि भारतीय बोली और

मिश्र भाषा की वास्तविकता नज़र आती है। उपन्यास के अंतर्गत विभिन्न भाषाओं का शब्द प्रयोग उपन्यास को सजीव बनाता है।

4.5.2.6 **मुहावरे -**

भाषा को अधिकाधिक सुंदर बनाने के लिए मुहावरों का भी प्रयोग किया हुआ दिखायी देता है। जो कम शब्दों में भी बहुत बड़ी बात कह जाता है। उपन्यास में आए मुहावरें इस प्रकार है -

तिश्ते रहना, कलपाते रहना, खुलक जाना, मुँह लटकाए घूमना, घूरते रहना, गली में उतर आना, उखड़ना, तिल-तिल करना, खुँटकर रख देना, हाथ आना, टीका टिप्पणी करना, हाथ साफ करना पौ पटना, चहकना, खुँटकर रख देना, सकपकाना, खून सूखना, मुँह सटाते हुए, चिपककर रहना, मथा जाना, थपेड़े मारना, दाँत किटकिटाना, आँखे छलछलाना, रस लेना, अपने आप में उतरना, कुनकुनाने लगना, रिसते रहना, झर-झर बहना, जली-भुनी उगलना, सुबकना, अँगोट लेना, हिचकिचाहट भरना, उसाँस निकलना, घूरते रहना, उचक-उचककर[19] आदि इसप्रकार मिश्र जी ने मुहावरें दार भाषाओंका प्रयोग किया है।

4.5.2.7 **अलंकारिक वाक्यों का प्रयोग :-**

उपन्यास की शुरुआत ही मिश्र जी ने अलंकारिक शब्दों से की है, जिन्हे पढ़कर मिश्र जी के कवि मन की प्रचीती होती है। 'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास में कुछ अलंकारिक वाक्यों का प्रयोग भी दिखायी देता है जैसे -

1) ''उन्हीं के बीच कहीं सुरों से लिपटी हुई ही आई अम्मा की स्नेह-भरी मुलायम-मुलायम आवाज - 'उठो, ए राजन'

2) खुबसूरत आवाजों को बेसुरा करती काँव-काँव

3) किनारे किनारें जैसे जल नहीं, सोना पिघलकर बहा जा रहा है। प्रकृति ने सहसा अपनी बन्द मुट्ठी खोल दी हो जिससे उनास निकलकर बाहर बहने लगी हो।

4) जब ब्याहकर आई थीं तो गोरे रंग पर उभरे तीखें नाक-नक्श घर-घर में छाए रहते, जैसे साफ पानी में गहरे रंग का कमल सीधा उठा हुआ हो।

"क्या हिन्द का जिन्दा काँप रहा है गुँज रही हैं। तकरीरे उकताए हैं शायद कुछ कैदी और तोड़ रहे है जंजीरें।" इस तरह कुछ काव्य की पंक्तियों का भी प्रयोग हुआ है।

कमलाबाई के सौन्दर्य का वर्णन -

"तीस को छूती उम्र, लम्बा इकहरा शरीर, नाक-नक्श इतने पैने नहीं कि चुभें और इतने दबे हुए भी नहीं कि खो जाएँ। दुबले-पतले चेहरे पर वे बड़ी सौम्यता से उभरते थे। पतले-पतले होंठ, मुस्कानों में जब फैलते तो जैसे मिठास की मद्धिम रोशनी फैल जाती। कमलाबाई खुबसूरत होते हुए भी साधारण थी और साधारण होते हुए भी खुबसूरत।"[18]

काले घने बाल, गोरे मुख को और आलोकित करतीं पान रचें होंठों की लाल-लाल मुस्कानें - जो रह-रहकर राजन की माँ की तरफ जाती थी - उन पर स्नेह के कटोरे पर कटोरे उड़ेलते हुए।

ओमी-ओमी का व्यक्तित्व बहुत ही स्नेहिल था। मझौला कद, भरा-भरा शरीर, गोरेपन की तरफ झुका हुआ साँवला रंग। सुन्दर नहीं, पर मनोहर रंग-रूप जो पास बैठ जाए, तो वह शीतलता महसूस करे।

उपन्यास में समाविष्ट स्त्री पात्रों के वर्णन मे अलंकारिक शब्द और सहज स्वाभाविकता की झलक दिखायी देती है।

4.5.2.8 **लोकोक्तियाँ :-**

1) मैंया तोरे दुआरे मैं आई ..... मैय्या तोरे दुआरे।
2) देवकी सुरेश्वरि भगवति गंगे
3) "कहीं कुछ-सड़त बा" "कुछ गँधात है रे"
4) 'चाँदतारा गुड्डी की बोम है।'
5) ढोला मारु, सादाव्रत सारंगा।
6) आगे नाथ न पीछे पगहा मुंशीजी दुधारू गाय है।[19]

इस प्रकार मिश्र जी लिखित इस उपन्यास में कहीं-कहीं पर लोकोक्तियों के साथ-साथ सुभाषित भी दिखायी देते है।

4.5.2.9 **सुभाषित :-**

1) अगर गृहस्थ आदि होना कर्म है तो आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ना धर्म है।

2) गृहस्थ होने से जोखिम उठाने का वह माद्दा नहीं रह जाता आदमी डरपोक हो जाता है।

3) भीख का दान निकृष्ट दान है, काम का दान श्रेष्ठ दान है।

4) स्वस्थ शरीर के माध्यम से ही स्वास्थ्य का ख्याल किया जा सकता है।

5) कैसी विडम्बना कि जब तक समझ में आता है कि जीवन जो तुम्हें मिला उसका क्या करना चाहिए, तब तक जीवन ही समाप्ति पर आया दिखता है।[20]

भाषा के विभिन्न रुपों के साथ शिल्प को सँवारा है।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का शिल्प निम्नलिखित तत्वों के अनुसार उभर आता है।

4.6 वस्तुशिल्प :

"कथावस्तु का स्थान उपन्यास में रीढ़ की हड्डी के समान होता है। ज्यों-ज्यों उपन्यास का विकास होता गया त्यों-त्यों वस्तुशिल्प में परिवर्तन होता गया। हिन्दी के आधुनिक उपन्यासकारों ने कथा में विस्तार की अपेक्षा गहराई की बहुलता की अपेक्षा घटनाओं का संकोच और स्थूलता की अपेक्षा सूक्ष्मता को प्रधानता दी है।"[21]

उपन्यास का निर्माण कथावस्तु के बिना संभव नहीं है। कथावस्तु शिल्प तत्व का वह महत्वपूर्ण अंग है जिसमें की घटनाओंको प्रथम स्थान दिया जाता है। घटनाओं को चित्रित करनेका सबसे एहम् स्थान वस्तुशिल्प में ही दिखायी देता है।

"संरचना की दृष्टि से पाँच आँगनों वाला घर अपनी बनावट और बुनावट में अत्यंत सघन और संस्लिष्ट हैं। कथानक के विकास के लिए प्रसंगों का नियोजन इतने कौशल्य से किया गया है कि न तो कही स्फीति है और न ही बिखराव कथानक और चरित्रों को पूर्ण विकास का अवसर मिला है। ऐतिहासिक प्रामाणिकता और औपन्यासिक कला की सिद्धी का मणि-कंचन योग इस कृति में विलक्षण परिपाक का उदाहरण प्रस्तुत करता है। प्रभावपूर्ण और आकर्षक रचनात्मक भाषा गोविन्द मिश्र कि अपनी सिद्धी है।"[22]

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का वस्तुशिल्प भारतीय समाज का एक ऐतिहासिक सत्य है।

4.7 चरित्र चित्रण :

उपन्यास मनुष्य जीवन का प्रतिबिंब है। मनुष्य जीवन की गाथा उपन्यास में होने के कारण उपन्यास में चरित्र का स्थान असाधारण है। मिश्र जी लिखित यह उपन्यास मनुष्य समाज का दारूण दस्तावेज है। 1940 से लेकर 1990 तक के भारतीय समाज को, इतनी सच्चाई के साथ पेश किया है कि इसे पढ़कर ऐसा एहसास होता है कि भारतीय परिवार में रहनेवाले को हम झाँक रहे है। इस उपन्यास का हर एक पात्र इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। पात्र तथा चरित्रों के इर्द-गिर्द ही उपन्यास का विकास नजर आता है। पात्रों की जीवन गाथाओंको प्रस्तुत करते हुए चरित्र को ही केन्द्र बिंदु के स्थान पर पर रखा हुआ है। हर एक चरित्र की एक अलग पहचान बतायी गयी है। शुरु से लेकर अंत तक सभी पात्र उतने ही महत्वपूर्ण है जितना की उनका जीवन।

''इस उपन्यास में चरित्रों के माध्यम से उपन्यासकार पात्रों की बाह्यांग रूप-रेखा, ऊँचाई-लम्बाई-रूचि-अरूचि, विचार संस्कार आदि का विस्तृत वर्णन करता है। साथ ही उसके मन की अवस्थाओंका भी वर्णन करता है। जिसमें चेतन मन, अर्धचेतन मन और अचेतन मन''[23]

इस उपन्यास में दादी माँ से लेकर बंटू, बिट्टो, छोटू तक के पात्रों की श्रृंखला है जो करीब पाँच पीढ़ियों के पारिवारिक सदस्यों का प्रतिनिधित्व करती है।

उपन्यास में समाविष्ट चरित्रों का चित्रण करते समय मिश्र जी अपने पात्रों द्वारा ही उन घटनाओं को दोहराते है जिस तरह के शिल्प को उन्होंने अपने मस्तिष्क में बसाया है।

''गोविन्द मिश्रजी मनुष्य की रचनात्मक संभावनाओं के सफल अन्वेंषी हैं। 'पाँच आँगनों वाला घर' के पात्रों में उनकी इस मानवीय निष्ठा को भली प्रकार देखा जा सकता है।

<u>जोगेश्वरी</u> - अपनी कर्म निष्ठा, प्रबंध कौशल, दायित्व चेतना, ममत्व, साहस, धैर्य, सांस्कृतिक निष्ठा की दृष्टि से भारतीय नारी का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। उनके व्यक्तित्व में गंगा की पवित्रता है।

मुंशी राधेलाल - कर्मठ, सदाचारी, उदार, कलाप्रेमी और व्यापक दृष्टिकोन रखनेवाले व्यक्ति हैं। बाहर से कुछ विलासी दिखतें हैं किंतु समय आने पर वे सब कुछ छोड़कर साहसपूर्वक स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ते हैं और इसी में जीवन की सार्थकता मानते हैं।

मोहन - ईमानदार सरकारी अधिकारी है और अवकाश प्राप्त करने पर सन्नी के साथ देश सेवा में लग जाता है।

शांतिदेवी, ओमी - बड़े घर के उदात्त वातावरण की स्पष्ट छाप है।

सन्नी - आरम्भ में कुछ निष्क्रिय और विपथ दिखाई पड़ते है। किसी सीमा में लांछित और उपेक्षित भी हैं। किंतु सारंगी से शुरु होने वाला उनका जीवन संन्यास की सीढ़ियों से होता हुआ संघर्ष की ऐसी उदात्त भूमि पर पहुँच जाता है कि वे मूल्यनिष्ठ रचनात्मक कर्मचेतना के प्रेरक प्रतीक बन जाते हैं।

राजन - पाँच आँगनों वाला घर में ही पला है रम्मो के प्रभाव से वह परिवार से विमुख होने के लिए विवश होता है। किंतु पाँच आँगनों वाला घर उसे बार-बार बनी स्मरण आता है। उससे जुड़ने की कशिश उसमें निरन्तर बनी रहती है। इसीकारण वह अपने हिस्से का कमरा रम्मो को बिना बताए छोटे को दे देता है।

घनश्याम, बाँके और रम्मो के विपरीत आचरण एक औपन्यासिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए गढे गए है। किंतु उनकी विपरीतता के भी मनोवैज्ञानिक कारण हैं।

कमलाबाई - पेशे से तवायफ हैं। कोठा चलाती हैं। किंतु उनकी चरित्र निष्ठा, प्रेम त्याग और मानवीय बोध हमारे मन में उनके प्रति उदार भाव उत्पन्न करता है।

हेड मास्तर स्मिथ - प्रशासन के दबाव में राजन को दंडित करते हैं किंतु मानवीय स्तर पर उससे क्षमा माँगते हैं और राधेलाल की गिरफ्तारी की सूचना देने उनके घर चले जाते हैं यह आश्चर्यजनक हैं किंतु मिश्रजी अंग्रेजों में भी एन्ड्रूज की संभावना से इन्कार नहीं करना चाहते।

गोवर्द्धन - मन, वाणी और कर्म से गाँधीवादी समाज सेवी है।

बंटू, बिट्टो और छोटू - पारम्पारिक मूल्यो से विछिन्न, आत्मकेन्द्री मनोवृत्ति वाले, नई पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं।''[24]

डॉ. तिवारी के इस विवेचन से पाँच आँगनों वाला घर इस उपन्यास के पात्रों के चरित्रों की विशेषता हर एक चरित्र की बुनावट नज़र आती है। मिश्र जी ने रचना के अंतर्गत पात्रों के महत्व को अनन्य साधारण बताया है। पात्र अपने आप में एक ऐसी छाप छोड़े जाते है। जिससे कि उपन्यास का चरमोत्कर्ष बिंदू उच्युता की सीमा तक पहुँच जाता है। चरित्र चित्रण करते हुए मिश्र जी की लेखनी पूरी प्रामाणिकता के साथ उतर आती है। कही पर भी किसी तरह की बनावट अथवा विसंगतियाँ नजर नहीं आती है। मिश्र जी के चरित्रों में मनोभाव, स्वाभिमान, राष्ट्रभाव, आत्मीयता, राजनीति का समझ दैन्य भाव, आत्मीयता, अपनापन, अलग्योझा पन, स्वार्थी और आपमतलबी, भाव दिखायी देते है।

चरित्र-चित्रण के माध्यम से हर एक व्यक्तित्व की झाँकी दिखायी देती है। उपन्यास का कथानक 1940 से लेकर 1990 तक के भारतीय समाज की वास्तविकता को दिखाता है। इसी कारण उस तत्कालीन व्यक्तियों के व्यक्तित्व का सच्चा दर्शन हो जाता है। अतीत के साथ-साथ आधुनिक पीढ़ि के व्यक्तित्व की झाँकि को मिश्रजी प्रस्तुत करते हैं।

4.8 **कथोपकथन :**

कथोपकथन के कारण उपन्यास का शिल्प और भी अधिक उजागर हो जाता है। कथोपकथन तथा संवाद उपन्यास की जान होते हैं। जीवन जीते समय जिस तरह संवादो की एहमियत होती है उसी तरह उपन्यास में संवादों का होना जरुरी होता है। पात्रों के बीच के संवाद दिखाना आवश्यक बन जाता है।

कथोपकथन संबंधी गुलाबराय के विचार इसप्रकार हैं - ''कथोपकथन की भाषा ही पात्रानुकूल नहीं होनी चाहिए वरना उसका विषय भी पात्रों के मानसिक धरातल के अनुरूप होना वांछनीय है। पात्रानुकूल वैचित्र्य के साथ ही उसमें स्वाभाविकता, सार्थकता, सजीवता और संक्षिप्तता के गुण होना वांछनीय है''[25] उपन्यास में कथोपकथन को अनिवार्य तत्व माना है।

मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के कथोपकथन में जीवितता दिखाई देती है। घटना के अनुरूप और प्रसंगानुरूप वार्तालाप मे सजीवता दिखायी देती है। संवादों में आँचलिकता, स्वाभाविकता समन्वयकता के साथ-साथ उपयुक्तता

और संक्षिप्तता भी दिखायी देती है। पाँच आँगनों वाला घर उपन्यास का कथोपकथन अत्यंत सरस हुआ है। वार्तालाप में बनारसी बोली, दिल्ली की बोली और आधुनिक भाषा का, हिंदी भाषा का प्रयोग किया गया है। जो समय समय पर उचित और आकर्षक भी लगता है।

4.9 देशकाल और वातावरण :

उपन्यास कार के लिए देशकाल वातावरण की तरफ अधिक सूक्ष्मता से ध्यान देना होता है। जिस काल को लेकर कथानक का निर्माण किया जाता है। उस काल की सभी तरह की परिस्थितियोंका परखना और कालानुरूप उसका चित्रण करना आवश्यक बन जाता है। ''उपन्यास में देश काल और वातावरण शिल्प का अभिप्राय यह है कि उसमे किसी समाज या देश की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ चित्रित हों। साथ ही साथ लोगों के रहन-सहन, आचारण के ढंग, विचार प्रणाली, विभिन्न रीति-रिवाजों का सम्यूक वर्णन हो। सफल वातावरण और विस्तृत प्रवृत्ति चित्रण से कथावस्तु में मार्मिकता आती है। पात्रों की विभिन्न मन:स्थितियों का प्रभावशाली ढंग से चित्रण हो सकता है। देश काल वर्णन से उपन्यास की वस्तुशिल्प में यथार्थता एवं चरित्र-चित्रण शिल्प में संगती आती है।

'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास का देशकाल वातावरण अत्यंत सजीव बन पड़ा है। इसका देशकाल वातावरण देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि, मिश्र जी भारत के इतिहास को ही उपन्यास में प्रतिबिंबित करते है। 1940 से लेकर 1990 तक के हर उस हाल को मिश्र जी हू-ब-हू वर्णित करते है। इन सभी कालों पर दृष्टि डालने से ऐसा प्रतित होता है कि हम इतिहास को ही पढ़ रहे है। बदलती परिस्थिती के अनुसार देशकाल वातावरण में घटना के अनुसार कथानक के अनुसार परिवर्तन लाने की कसब शायद मिश्र जी के लेखनी में ही नजर आती है।

देशकाल वातावरण शिल्प को अधिक प्रभावशील बनाने के लिए घटनाओंके क्रमानुसार देशकाल वातावरण दिखाना, यह लेखक की प्रतिभा और कल्पना पर निर्भर होता है। इस उपन्यास के देशकाल वातावरण में, स्वाभाविकता, आँचलिकता प्राकृतिक चित्रण, पारिवारिक चित्रण, सामाजिक चित्रण, राजनीतिक और सांस्कृतिक चित्रण अत्यंत वाचनीय, सराहनीय बन पड़ा है। पाँच पीढ़ियों को एक ही कथानक में गूँथना और हर एक

पीढ़ि का अलग चित्रण करना तथा उस तत्कालिन परिस्थिति को प्रामाणिकता की कसौटि पर कसना यह एक बहुत ही जोखिम भरा काम है। मिश्र जी इसके कारिगर है।

4.10 उद्देश्य :

गोविन्द मिश्र की दृष्टि से अपने जीवन की गुत्थियों को सुलझाने का एक महत्वपूर्ण जरिया है लिखना। लिखना उनके लिए अत्यावश्यक बन गया था। इसीकारण कई ऐसी साहित्यिक रचनाओं का निर्माण उनके हाथों हुआ है। जो पाठकों को सिर्फ आनंद ही नहीं देता है - बल्कि सामाजिक स्थिति की पहचान भी करा देता है। अपनी मनाअनुभूतियों को साहित्य के माध्यम से व्यक्त करके साहित्यकार अपने मन को खाली कर देता है। सर्वप्रथम साहित्य रचना करने का किसी साहित्यकार का यह नीजी एवं उतना ही महत्व पूर्ण उद्देश्य होता है। साथ ही साहित्य के माध्यम से वह जनसेवा करने का उद्देश्य भी सफल करवाता है। उद्देश्य शिल्प की पूर्ति होने के लिए उपन्यासकार आदर्श, यथार्थ और मनोविज्ञान की धरातल पर अपनी रचना का निर्माण करते है। स्वयं तटस्थ रहकर उपन्यासकार पात्रों, कथा, चरित्रों और संवादों द्वारा अपने विचारों को कलात्मक ढंग से प्रतिपादित करता है।

"साहित्यकार उपन्यास - रचना के निमित्त विषय चयन सोद्देश करता है और अपनी प्रतिभा एवं अध्ययन अनुभव के द्वारा कृति में उसी उद्देश्य का प्रतिपादन करती है। और अपनी प्रतिभा एवं अध्ययन अनुभव के द्वारा कृति में उसी उद्देश्य का प्रतिपादन करता हैं।"[26]

साहित्यकार का साहित्य निर्माण करने का कोई न कोई उद्देश्य तो रहता ही है। पश्चिम के साहित्यकारों का उद्देश्य आनंद प्राप्ति, जीवन की आलोचना करना प्रसन्नता देना तथा शिक्षा देना आदि बातों पर ध्यान देते है। भारतीय साहित्यकार तथा आलोचकों ने आदर्शवाद और यथार्थवाद को महत्वपूर्ण माना है। "उपन्यासकार साहित्य के प्रति विभिन्न दृष्टिकोणों से देखता हैं, अत: इसका लक्ष्य सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं का चित्रण करना होता है तो दूसरें का मनौवैज्ञानिक रहस्य खोलना। एक लेखक सामाजिक विषमताओंका चित्रण करके वर्गभेद मिटाने का संदेश देता है, तो दूसरा दार्शनिक पक्षों का विस्तृत रूप से चित्रण करने में अपनी इति कर्तव्यता मान लेता है। कोई उपन्यासकार किसी गाँव या आँचल को केन्द्र मानकर उसी को सुक्ष्म ब्यौरे से वर्णित करना अपना लक्ष्य मानता है। तात्पर्य बिना उद्देश्य के उपन्यास की हम आज कल्पना भी नहीं कर सकते।"[27]

साहित्यकार कोई न कोई उद्देश्य सामने रखकर ही अपनी कलाकृति का निर्माण करता है। समाज के प्रति दायित्व निभाने का अच्छा अवसर उद्देश्य के माध्यम से ही मिलता है। अपने मन की सभी इच्छा आकांक्षाओं को पूरा करने का सर्वश्रेष्ठ स्थान उद्देश्य के जरीए ही हो जाता है। उद्देश्य तथा शिल्पगत उद्देश्य में साहित्यकार अपने टेकनिक के साथ-साथ अपने उद्देश्य को भी सफल बनाता है। यथार्थ तथा आदर्श उपन्यासों के माध्यम से साहित्यकार समाज की घोर वास्तविकता को उपन्यास में वर्णित करता है। और अपने मन में छुपे हुए आदर्श विचारों को प्रकट करने का एक सशक्त माध्यम उद्देश्य ही होता है। इस प्रकार, नावलौकिकता के साथ-साथ, मनोरंजन, समाजसेवा, राष्ट्रप्रेम, और सामाजिक सद्भावना आदि बातों को प्राप्त करना भी उद्देश्य शिल्प होता है। उद्देश्य की सफलता प्राप्त कराने वाले साहित्यकारोंको और भी अधिक प्रेरणा मिलती है तथा साहित्यिक सफलता गगन चूमती है। इसी कारण उपन्यासकार का प्रथम लक्ष्य ही शिल्पगत उद्देश्य का होता है।

मिश्र जी ने 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में भारतीय परिवार के विघटन और संयुक्त परिवार का बिखराव दिखाया है। जो सच्चाई से भरपूर होने साथ पारिवारिक स्थिति को प्रतिबिंब की तरह दर्शाता है। ''गोविन्द मिश्र कथा को मोहभंग से गुजारते हुए सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते है। राजनीति का मूल्यहीन व्यवसाय, अदूरदर्शी सत्ताकामी नेतृत्व, धर्म का व्यापार, उपभोक्तावादी दबाव और इन सबके बीच यातना भोगते सामान्य जन'' मिश्र जी का यह उपन्यास भारतीय समाज के पचास सालो में हुए सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक परिवर्तन को चित्रित करते समय इस बात की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते है कि नई पीढ़ियों का पुरानी पीढ़ियों के साथ किस तरह का व्यवहार होता है। डॉ. प्रेमशंकर जी ने इस उपन्यास को मोहभंग का दारूण दस्तावेज ऐसा कहा है।

विकास के नाम पर नई पीढ़ि में आया हुआ परिवर्तन और पाश्चात्यों के प्रभाव के कारण भौतिक लालसा से आकर्षित होकर अकेले रहने की इच्छा पर अड़े रहने की भावना, माँ-बाप के साथ दुर्व्यवहार के साथ पेश आना। सन् 1990 के बाद के भारतीय परिवारोंका यथार्थ चित्रण करने में मिश्र जी सफल हुए हैं। पात्रों और कथावस्तु के माध्यम से मिश्र जी ने अपने मित्र के परिवार की त्रासदी को मोहभंग की दारुण स्थिति को, नई पीढ़ि में रिश्तों नातों के प्रति स्वार्थि भावना को लेकर अपने विचारों को प्रकट किया है। यथार्थता

की कसौटी पर उन्होंने उपने प्रतिपाद्य को इस प्रकार कस दिया है कि इस तरह की रचना करने में प्रेमचंद से भी वह आगे निकल आए है। उनका चिंतन, उनकी आत्मानुभूति और उनकी संवेदनशीलता सफल उद्देश्य का सही परिपाक है।

मिश्र जी के उपन्यास के उद्देश्य शिल्प में, उद्देश्य में सफलता तो मिली है किंतु अत्याधिक यथार्थ के कारण शिल्प में सौन्दर्य नहीं दिखायी देता है। वास्तविकता और प्रामाणिकता के कारण कलात्मकता पर अन्याय हुआ दिखायी देता है। शिल्प की बुनावट में एक खण्डित भाव दिखायी देता है। कभी कभी अत्याधिक उद्देश्य प्रियता उपन्यास को अकलात्मक बना देती है। जो जैसा हुआ था वैसा ही प्रतिपादित हुआ है। कल्पना के गहरे रंगों से वह सजा नहीं और व्यर्थ बातों को लेकर उसमें बनावट भी नहीं दिखायी देती। बहुत बढ़ा-चढ़ाकर लिखने की आवश्यकता भी मिश्र जी को नही लगी है। यही कारण है कि सुंदरता, आकर्षण, रोचकता से अधिक इसमें आम तौर पर जीवन जीने वाले मनुष्य की प्रामाणिक झाँकियाँ ही प्रस्तुत हुई हैं। घोर सामाजिकता के साथ-साथ मनुष्य जीवन की विडंबनायें और अपने में रहते हुए भी अपनापन भूलनेवालो के साथ रहकर हजारों में भी मैं अकेला। अकेलेपन की प्रबल भावना के साथ जिनेवाला वर्तमान स्थिति का भारतीय समाज। अपने उद्देश्य को वह सफल बना गए है।

4.11 भाषा तथा शैली :

"शैली लेखक के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। लेखक का व्यक्तित्व उसका जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण, भाव, कल्पना, संस्कार, प्रतिभा आदि पर निर्भर होता है। आशय के अनुकूल शैली होनी चाहिए तभी लेखक के प्रतिपादन में प्रभाव एवं सघनता पैदा होती है।" हिन्दी उपन्यासकारों ने चार प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है - "समास शैली, व्याख्यात्मक शैली, संवाद शैली और संकेत शैली। उपन्यास के विकास के साथ शैली शिल्प में भी विकास होता रहा है।"[28]

उपन्यास में वास्तविक चित्रण होने से शैली का विशेष महत्व होता है। उपन्यास में मनुष्य जीवन का चित्रण होता है, मनुष्य जीवन की वास्तविकता को भी अगर उपन्यास में भर दिया जाए तो उसकी शैली में प्राण आता है। उपन्यास में यथार्थ और स्वाभाविकता नहीं होती है तो उपन्यास की शैली में जान नहीं आती है। आधुनिक उपन्यास जिसमें यथार्थ

पुट-पुट कर भरा हुआ है उसमें स्वाभाविकता से मनुष्य जीवन की झाँकि को प्रस्तुत किया जाता है। यथार्थता और स्वाभाविकता शैली के महत्वपूर्ण अंग माने जा सकते है। गोविन्द मिश्र जी लिखित उपन्यास 'पाँच आँगनों वाला घर' यह इन दो बातों पर आधारित है। गोविन्द मिश्र जी ने इस उपन्यास के माध्यम से तीन पीढ़ियों का ऐतिहासिकता पर आधारित जो चित्रण किया है। वह जीवन की सच्चाई को बिना किसी शिकायत से प्रकट करता है। मिश्र जी ने जैसे भारतीय परिवार के कथानक को एक के बाद एक करके करीब तीन पीढ़ियों के जीवन को उद्घाटित किया है। इस तरह का वर्णन देखने के बाद और इसकी स्वाभाविकता तथा यथार्थता की ओर देखकर ऐसा महसूस होता है जैसे वह स्वयं समय है और समय होकर ही सब कुछ अनुभव करके लिखते है। मिश्र जी ने ''पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में भाषा शैली का प्रयोग स्वाभाविकता से किया है, इसमें न नाटकियता है और न ही बनावटता बल्कि इसमें अलौकिकता है, सहजता और ओजस्विता दिखायी देती है। भाषा के एक से अधिक स्तर उनकी सामर्थ्य के प्रमाण है। तत्सम भाषा के साथ बोलचाल की मुहावरेदारी का प्रयोग उपन्यास को पठनीय बनाता है और इसके साथ यात्रा में कठिनाई नहीं होती। गोविन्द मिश्र के कथा साहित्य का देशज चरित्र उनकी शक्ति है। और पात्रों के विन्यास से लेकर भाषा शिल्प तक में देखा जा सकता है।''[29]

उपन्यास के तत्वों के अनुसार शिल्प का अनुशीलन करने के लिए उपन्यास की शैली तथा भाषा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। जितनी की कथावस्तु। भाषा वह साधन है जो उपन्यासकार को साध्य तक पहुँचाती है। सबसे महत्वपूर्ण होने के बावजूद भी भाषा का सुस्पष्ट होना सहज होना शुद्ध और सात्विक होना शैली के लिए आवश्यक होता है। साहित्यकार की रचना जिस तरह की होती है उसी तरह की भाषा का निर्माण करने की कला उसमें होती है। शिल्प की बुनावट किस प्रकार से की हुई है। यह साहित्यकार की भाषा से ही प्रतीत होता है। तथा साहित्यकार पर निर्भर है।

शिल्प और शैली का संबंध अभिव्यक्ति से है। शैली शिल्प के अधिनस्त मानी जाती है। वस्तुत: शैली ही किसी लेखक की पहचान हैं। इस दृष्टि से शैली और शिल्प का निकट संबंध हैं। दोनों एक दुसरे के पूरक है। शैली भाषा का रूप चमत्कार है। प्राचीन भारतीय चिंतको ने शैली को बड़ा महत्व दिया है। शैली का संबंध कथाकार के व्यक्तित्व से है। साथ ही भावाभिव्यक्ति एवं भाषा के विशेष परिधान से है। प्रत्येक लेखक का अपना

स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है। उसकी अपनी स्वतंत्र शैली होती है। यह शैली उसके विचार, भाव, कल्पना, संस्कार, स्वभाव, प्रतिभा और जीवन दृष्टि के अनुरूप अभिव्यक्त होती है। शिल्पविधिका संबंध रूप रचना की समस्त प्रक्रियाओं से है। उसका संपूर्ण ढाँचा (Structure) है तो शैली (Style) उस ढाँचे की अभिव्यक्ति की रीति है।

शिल्प का निर्माण भाषा से है। भाषा का निर्माण लेखक की अनुभुति और अभिव्यक्ति से है। सृजनता और स्वाभाविकता, यथार्थता और ओजस्विता से लेखक की साहित्य का निर्माण होता है। शिल्प का निर्माण भाषा की कसौटी, रचना प्रक्रिया पर निर्धारित होता है। शिल्प के अंतर्गत विविध शैलियों का प्रयोग किया जाता है।

4.12 **विविध शैलीयों का प्रयोग :**

4.12.1 **वर्णनात्मक शैली -**

''वर्णनात्मक अथवा ऐतिहासिक शैली का व्यापक प्रयोग हिन्दी उपन्यासों में पाया जाता है क्योंकि इस शैली के द्वारा उपन्यासकार को अपेक्षा कृत विषय-विस्तार के लिए अधिक भूमि मिल जाती है और उसे कलात्मकता का भी उतना ध्यान नहीं रखना पड़ता। इस शैली के उपन्यासकार को इतिहास की भाँति उपन्यास के चरित्रों तथा उनसे सम्बन्धित घटनाओं का 'इतिवृत्तात्मक वर्णन अपनी कल्पना अनुभूति एवं जानकारी के आधार पर लिख देना होता है। अन्त में वह कभी-कभी एक तटस्थ द्रष्टा की भांति अपना कोई न कोई निर्णय भी घोषित कर अपनी किसी न किसी मान्यता की स्थापना करने की चेष्टा भी करता है।''[30]

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में गोविन्द मिश्र जी ने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। सभी दृष्यों का सजीव वर्णन करने में वे काफी सफल हुए हैं। इस उपन्यास में सभी प्रकारों का वर्णन आया हुआ है। प्राकृतिक वर्णन, पारिवारिक वर्णन, सामाजिक, आँचलिक, राजनीतिक और धार्मिक वर्णन भी दिखायी देता है। जिसमें यथार्थ भी हैं, कला भी है और स्वाभाविकता भी है। उपन्यास के माध्यम से मिश्र जी ने मनुष्य जीवन की गाथा को अत्यंत प्रामाणिकता से वर्णित किया है। इस उपन्यास की वास्तविकता की ओर देखने से यह प्रतीत होता है कि हम किसी परिवार के इतिहास को ही पढ़ रहे हैं। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस पूरे उपन्यास का कथानक 1940 से लेकर 1990

तक की भारतीय समाज के भारतीय परिवार का आँखो देखा लेखा है। इस तरह उपन्यास पूरे भारतीय परिवार की स्थितियों को वर्णित करना और करीब पाँच पीढ़ियों की जीवन गाथा को प्रस्तुत करना यह श्रेष्ठ उपन्यासकार करता है। मिश्र जी ने इस तरह के उपन्यास को निर्माण करके उच्च कोटि के उपन्यासकारों में स्थान प्राप्त कर दिया है। कई पीढ़ियों के कई पात्रों के जीवन की सभी तरह की त्रासदी को इसप्रकार अपने मस्तिष्क में रखना वास्तविकता के साथ-साथ थोड़ासा काल्पनिक आधार लेते हुए इस बृहद् कथानक को संपूर्णता के साथ संक्षिप्तता में वर्णित करने की खूबी शायद अकेले मिश्र जी में ही है।

मिश्र जी ने इस उपन्यास में जिस प्रकार की वर्णन शैली का प्रयोग किया हुआ है वह इस प्रकार हैं -

सुबह के सुंदर वातावरण का वर्णन उपन्यास के शुरूआत में ही किया हुआ है। कार्तिक स्नान के लिए जानेवाली स्त्रियों के साथ-साथ नदी का वर्णन गंगा नदी का वर्णन, पारिवारिक वर्णन भी उन्होंने पूरे यथार्थ के साथ किया हुआ है - ''पूरे घर का चूल्हा एक था जिसमें कोई सौ लोगों का तो खाना रोज बनता ही था। बेलने और सेंकने के लिए दो-दो औरतों की पारी बँधी थी। इसके साथ साथ पक्वानों का भी वर्णन मिश्र जी कितनी सहजता से करते है यह दिखायी देता है - 'संक्रान्ति का दिन। घर में रामनगर का बैंगन भूना जा रहा था। बोरसी की आग में दो बड़े-बड़े बैंगन - एक काला और एक सफेद। दोनों के बीच में चाकू से छेद करके हरी मिर्च और लहसुन भर दिए गए थें। दूसरी तरफ चूल्हे के नीचे आलू डाले हुए थे। उड़द की दाल की खिचड़ी चढ़ी थी। साथ में आलू-मटर-गोंभी की तरही बनरसिया के यहाँ का बढ़िया दानेदार देशी घी डालकर बैंगन, आलू और टमाटर के भर्ते के साथ थोड़ा दही और पापड़ भी। उपर से बड़ी अम्मा, अम्मा और चाचियों के हाथ के बने आम कटहल और लाल मिर्च के आचार। दिनभर जब चाहे तिल वे लड्डू लईया का ढुँढा।''[31] इस प्रकार के वर्णन की ओर देखने पर मिश्र जी की घोर वास्तविकता नजर आती है। पक्वानों के वर्णन के साथ मिश्र जी ने सक्रान्ति के पूरे माहौल का सजीव वर्णन किया हुआ दिखायी देता है।

'पाँच आँगनों वाला घर' में पूरे घर का वर्णन भी मिश्र जी ने अत्यंत स्पष्टता से किया हुआ है। इसके साथ-साथ मिश्र जी ने इस उपन्यास में पात्रों का वर्णन, पात्रों के स्वभावों का वर्णन और धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि बातों को लेकर जो

प्रामाणिकता से भरपूर वर्णन किया हुआ है वह स्वाभाविक भी बन पड़ा है और रोचक भी! पात्रों के जीवन दर्शन को मिश्र जी प्रस्तुत करते हैं तो पात्रो के माध्यम से भारतीय समाज की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति को दर्शाते हैं।

मिश्र जी की लेखनी में वर्णन करने की जो अद्‌भूत क्षमता है, जो बिल्कुल नाटकीय भी नहीं हैं बल्कि सहज सुंदर, स्वाभाविक, संवेदनशील, सकृतीदर्शक है। वर्णन शैली के लिए उपयुक्त और सराहनीय है।

4.12.2 **मनोविश्लेषणात्मक शैली -**

मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में विविध शैलियों का प्रयोग हुआ है। विविध शैलियों के होते हुए भी यह उपन्यास उतना ही सहज स्वाभाविक और यथार्थता से परिपूर्ण बन पड़ा है। विविध शैलियों में मनोवैज्ञानिक शैली का भी प्रभाव दिखायी देता है। मानव मन के भीतर पनपने वाले विचारों का संबंध मनोविज्ञान में होता है। पात्रों के मन के उथल पुथल से और उनके अन्तर मन में चलनेवाले विचारों से मनोविज्ञान नज़र आने लगता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार 'फ्रायड' के सिद्‌धान्तो से प्रभावित है। इन उपन्यासों में अन्तरमन में चलने वाले क्रियाकलापों का लेखा जोखा प्रस्तुत करने के कारण प्राय: चेतनाप्रवाह और फ्लैश बैक टेकनीक शैली अपनायी जाती है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासो के चरित वर्गगत और सम (फ्लैट) न होकर व्यक्तिगत (इन्डीवीजुअल) और विषम (राऊण्ड) होते हैं। देशकाल चित्रण की ओर प्रवृत्त न होकर मनोवैज्ञानिक शैली में उपर्युक्त सभी बातों का समावेश दिखायी देता है। कभी-कभी संपूर्ण उपन्यास, मनोवैज्ञानिक शैली पर आधारित होता है, तो कुछ उपन्यासों में पात्रों की मनस्थिति द्वारा मनोविज्ञान और मनोवैज्ञानिक शैली का पता लग जाता है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में पात्रों के मन की स्थिति के अनुसार मनोवैज्ञानिक शैली का पता लग जाता है।

डॉ. प्रेमशंकर जी ने 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास को 'मोहभंग का दारुण दस्तावेज' कहा है " कथा स्वतंत्रता संघर्ष से प्रारंभ होकर 1990 तक आती है। जिसमें मोहभंग का स्वर प्रमुख है। उपन्यास का जब अन्त होता है तो कुछ मुद्दे उभरते दिखाई देते है, जैसे राजन के माध्यम से टूटते परिवारों की ट्रैजिडी और सक्रिय कार्यकर्ता सन्नी का गहरा मोहभंग। मोहभंग की दो दारूण स्थितियाँ हैं व्यक्ति और समाज।"[33]

मोहभंग का अर्थ है मन की इच्छा के विरूद्ध होना। 'पाँच आँगनों वाला घर' के भरे पूरे परिवार में बचपन बिताने वाले राजन को ऐसा लगता है कि उसका भी परिवार भरा पूरा हो। उसके परिवार में पाँच व्यक्तियों के पाँच अलग-अलग घर होते हैं। इस स्थिति को देखकर राजन का मन अत्यंत दु:खी हो जाता है। मन को ठेंच पहुँचने के कारण उसे अस्पताल में भरती करना पड़ता है। मन का टूटना, तथा ट्रेजडी जैसी बात की ओर देखने से मनोविज्ञान की प्रचिती होने लगती है। मिश्र जी ने पात्रों के मन में हुए भावों के उथल-पुथल को इस प्रकार चित्रित किया है कि पाठक का मन भावविभोर हो जाता है। सन्नी का जीवन चित्रण भी मनोविज्ञान शैली पर आधारित हुआ है। शिक्षा को अधूरा छोड़ना, कई महिनों तक घर से लापता होना, सारंगी की धुन में स्वयं को डूबो देना आदि मनोविज्ञान शैली को दर्शाते हैं।

मन की इच्छा को पूरा करने के लिए छटपटाते रहना ढेर सारे प्रयास करना किंतु कभी-कभी निराशा के कारण सदैव चिंता में खोए रहना यह मन की स्थिति की विडंबना होती है। राधेलाल का देशप्रेम के लिए अंडरग्राऊंड हो जाना और इन्ही विचारों के साथ, मन की इच्छा पूरी करने के जिद के कारण पारिवारिक जिम्मेदारियों से परे हट जाना। एक कर्ते धर्ते पुरुष की गैर जिम्मेदारयिों के कारण परिवार के लोगों की अस्वीकृती तथा उसी बात को लेकर पारिवारिक विघटन की शुरूआत। हँसते-खेलते भरे परिवार का बिखराव। इस प्रकार मोह का भंग होना और उसी मोह भंग के साथ जीवन की समाप्ति यही मनोवैज्ञानिक सत्य इस उपन्यास में दिखायी देता है। जोगेश्वरी की चिंता हो, या शांती की चिंता। कमलाबाई के मन में झाँकने पर, घनश्याम, बाँके, छोटे, रम्मो जैसे पात्रों के स्वभाव से उनकी मन:स्थिति के दायरे उलझने लगते है। पात्रों की मन:स्थितियों से मनोवैज्ञानिक शैली को देखा जा सकता है। ''बाहर तहस-नहस और भीतर शून्य। बच्चों की परवरिश में कहाँ गलती हो गई ? क्या कोई भी उन्हें सही परवरिश दे सकता है .... दे सकता है तो सभी बच्चे माँ-बाप जैसे ही निकलते। सही परवरिश क्या होती है..... और अगर बच्चों को वही निकलना है जो उन्हें निकलना है तो परवरिश का मतलब ही क्या रह जाता है? उसमें क्यों अपनी जिन्दगी खपाई राजन ने ऐसी कि अपने लिए कुछ नहीं किया .... करता तो आज बाहर भले ही तहस-नहस दिखता, भीतर तो शून्य न दिखता कम-से-कम''[34] इस तरह के वर्णन से मनोवैज्ञानिक शैली को प्रस्तुत करते है।

गोविन्द मिश्र के इस उपन्यास में मनोवैज्ञानिक शैली का प्रयोग हुआ है।

4.12.3 पूर्वदीप्ति शैली

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में मिश्र जी ने पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है।

चेतना प्रवाहवादी उपन्यासकार अतीत की घटनाओं को स्मृति के आधार पर प्रस्तुत करता है और अपने इस प्रस्तुतिकरण के क्रम में पात्र के मन में उठने वाले अन्य विचारों की भी उपेक्षा न कर उन्हें भी स्थान देता चलता है। इन विचारों के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे अतीत में घटी वास्तविक घटनाओं से संबद्ध हो। वे कल्पित भी हो सकते हैं और अतीत के ही न होकर वर्तमान और भविष्य के भी हो सकते हैं। ''फ्लैशबैक टेकनीक अंग्रेजी भाषा का शब्द है जिसे हिन्दी में पूर्वदीप्ति शैली कह सकते हैं। फ्लैश का अर्थ होता है प्रकाश और बैक का अर्थ होता है पीछे। पीछले जीवन को प्रकाशित करना। अंग्रेजी उपन्यासों में अधिकतर इसी शैली का प्रयोग किया जाता है।''[35]

कथा सूत्र को कलात्मक ढंग से जोड़ने के लिए पूर्वदीप्ति शैली का उपयोग मिश्र जी ने किया है। कथानक को पात्रों के माध्यम से अतीत की घटनाओं को वर्तमान में लाने की एक अलौकिक कसब मिश्र जी के लेखन में दिखायी देती है।

पूर्वदीप्ति शैली का उपयोग करके मिश्र जी ने अतीत की घटनाओं को वर्तमान में बाँधते है तो कथासूत्र का संगठन भी बनाए रखते हैं। राजन के विवाह के बाद वह जब सुहागराती कोठरी में अपनी पत्नी रम्मो के साथ होता है तो उसके सामने पाँच आँगनों वाले परिवार के सदस्यों के विवाह की पहली रात याद आती है। साथ ही में इस घर की परंपरा - ''इस घर में कितने लोग यहाँ विवाह के बाद ठहरे होंगे। चचेरे भाई रोहित सोहन ... जिनके विवाह में राजन नहीं पहुँच सका था। उनके पहले मोहन भैया का विवाह। बहुत पहले नइकी चाची, उसके पहले शायद बाबूजी और अम्मा भी ... कौन जाने दादा जिन्हें राजन ने देखा नहीं और दादी-अम्मा भी यहीं रहे हो। छोटी-सी इस कोठरी में पीढ़ी-दर-पीढ़ी। राजन को सिहरन हो उठती है - इन्हीं दिवारों के बीच उन लोगों ने अपना जीवन शुरू किया था जिनमें से कुछ अपनी जीवन-यात्रा पूरी करके भी जा चुके! राजन रम्मों भी इसी तरह से गुजर जाएँगे। ऐसे ख्याल शादी के शुरू के दिनों में? क्यों इसी कोठरी में ठहराया जाता है ... ताकि हम इस पूर्वजनों से जोड़ते चले खुद को, ताकि जवानी के खुमार में भी एक मोटी बात ओट न होने दी जाए कि तुम भी पहलों की तरह ही हो ... बड़े होंगे, बूढ़े होंगे, पृथ्वी पर हमेशा रहने के लिए नहीं आए हो।''[36]

इस प्रकार मिश्र जी ने अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक साथ ही प्रस्तुत किया है। इस तरह पूर्वदीप्ति शैली को अपनाते हुए मिश्र जी कम शब्दों में कई पात्रों, घटनाओं, दृश्यों और कालों को उद्घाटित करते हैं। यह वही साहित्यकार करता है जो अपने तंत्र कौशल से सतर्क रहता है। तंत्र कौशल्य को विकसित करने के लिए तेज बुद्धि के साथ-साथ अनुभूति का एहसास, कल्पनाशक्ति, प्रतिभा और सजग संवेदनशीलता का होना जरूरी होता है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के प्रमुख पात्र राजन के माध्यम से मिश्र जी कई साल पीछे ले जाते हैं और वापस राजन के मोड़ तक ले आते हैं। जैसे - सन्नी चाचा वाले हिस्से के पास से गुजरते समय उसकी आँखों के सामने घूम जाती बड़ी अम्मा की तस्वीर ... किनारदार सफेद धोती, सफेद जम्फर, बड़ी-बड़ी आँखों को और फैलाए वे भीतर एक-एक कोना ढूँढ रही है, कहाँ छिपा बैठा है उनका सनिया ... जैसे कभी 'सुख-सागर' किताब को ढुँढा करती थी। उधर से गुजरते हुए राजन अपने कदम तेज कर देता। आधा मन होता सन्नी चाचावाला हिस्सा एक बार खुलवाकर देखे, उस सारंगी को देखे जो बचपन में उसे मुग्ध करती थी। कहीं सचमुच बड़ी अम्मा घूमती मिल गई उन्होंने प्राण वही छोड़े थें।

''कहाँ वह समय जब गणेशजीवाले आँगन से इधर फटकावावाले आँगन को दिन में पचासों बार दौड़-दौड़कर नाप डालते थे, आर-पार कहाँ। जीवन का विकास क्या यही है - दौड़ का क्रमशः सिमटते चले जाना?''[37]

मिश्र जी जब अतीत को पात्रों के माध्यम से प्रकट करते हैं, पात्रों द्वारा बतायी गयी आत्मियता संयुक्त परिवार संबंधी उसके मन में पनपने वाली भावना तथा बुजुर्गों के प्रति उनकी आस्था नजर आती है।

4.12.4 **ऐतिहासिक शैली**

मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में घोर ऐतिहासिक चित्रण हुआ है। भारतीय समाज के सामन्ती परिवार का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। 1940 से लेकर 1990 तक का पूरा चित्रण भारतीय समाज के परिवार के इतिहास को ही दोहराता है। इसमें कोई शक नहीं है कि यह मात्र एक कल्पना है। यूँ कहा जा सकता है कि कल्पना का सिर्फ आधार लिया गया है। बाकी पूरा का पूरा कथानक आइने की तरह

समाज के प्रतिबिंब को दिखाता है। ऐतिहासिक वास्तविकता से लबालब भरे हुए चित्रण की ओर देखकर शत प्रतिशत यह कहा जा सकता है कि यह ऐतिहासिक शैली में लिखा गया है। इतिहास ही इसका आधार बन पड़ा है। उपन्यास का आशय, विषय और कथानक सभी में इतिहास ही है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस शीर्षक में ही ऐतिहासिकता की झलक मिलती है। इस उपन्यास की ऐतिहासिकता के संबंध में प्रेमशंकर जी का कथन सत्य लगता है - "गोविन्द मिश्र कथा का प्रामाणिकरण करना चाहते हैं। कई बार इतिहासकार की तरह। अगस्त क्रांति के दृश्य के बाद भी विभाजन की पीड़ा है जिसे मुंशी राधेलाल भोगते हैं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वे अंग्रेज हैडमास्टर स्मिथ का मानवीय पक्ष उभारते हैं जो साम्राज्यवाद का विरोध करता है। कथाकार गोविन्द मिश्र ने गांधी के विराट व्यक्तित्व को केन्द्रीयता दी है : गांधीजी के प्रभाव के चलते ही गोवर्ध्दन के जीवन में सादगी और आदर्श का विशेष महत्त्व था। उनकी पूरी सम्पत्ति एक झोले में समा जाती है। खान अब्दुल गफार खाँ, सीमान्त गाँधी याद आते हैं। दरअसल गोविन्द मिश्र पात्रों के माध्यम से भारतीय इतिहास के आधुनिक इतिवृत्त को पूरा करना चाहते हैं। बलिपंथी स्वतंत्रता संघर्ष से लेकर विचित्र वर्तमान परिदृश्य तक।"[38]

ऐतिहासिक चित्रण करते समय भारतीय सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पारिवारिक आदि सभी परिस्थितियों का उल्लेख किया हुआ है। बदलते पीढ़ि के अनुसार तत्कालिन सभी बातों को मिश्र जी ने हू-ब-हू चित्रित किया है जिसमें व्ही.पी.सिंग (पूर्व प्रधानमंत्री), मंडल आयोग, छात्र आंदोलन, पंडित नेहरू, गांधीजी, सुधाकर चतुर्वेदी, विवेकानंद आदि नेताओं के नामों से और उनके तत्वों की वैचारिक प्रगल्भता बताकर मिश्र जी ने भारत के इतिहास को इस उपन्यास के माध्यम से उजागर किया है।

"सत्ता में काँग्रेस है - स्वतन्त्रता आंदोलन के आदर्शोंवाली पार्टी, पर उसी के भीतर स्वार्थ की खुल्लमखुल्ला लड़ाई चल रही है। उसी चक्कर में स्वयं को गरीबों का हितैषी दिखाना, उसे दिखाने के लिए बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाना, वायदाखिलाफी कर राजाओं के प्रिवी पर्स छीन लेना ... कुछ करने से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया दिखाना। कहाँ गांधीजी की राजनीति जिसमें सत्य का आग्रह था, कहाँ यह जिसमें झूठ को बजाया जाना है, उसे सत्य की तरह प्रस्तुत करना है। भीतर कुछ और महसूस करना है, बोलना कुछ और है। गांधी-नेहरू-पटेल-आजाद जनता के सामने सब कुछ

खोलते हुए बोलते थे जनता को राजदाँ बनाते हुए।''[39] मिश्र जी ने इस प्रकार ऐतिहासिक शैली का उपयोग करते हुए भारतीय समाज के चित्र को अत्यंत सजीवता से प्रस्तुत किया है। इस प्रकार की शैली का उपयोग करते हुए पात्रों के माध्यम से देश की राजनीतिक स्थिति की चिंता के प्रति वे सहृदय सतर्क और सृजनशील दिखाई देते हैं। वे राजनीति के दाँवपेचों को भली-भाँति समझनेवाले, उसे परखने वाले अपनी अंतरात्मा से महसूस करनेवाले सतर्क प्रतिभाशाली विचारवंत है।

मिश्र जी के सोचने का ढंग बहुआयामी है, व्यापक दृष्टि के साथ-साथ, गहन चिंतन, व्यावहारिकता, सामाजिकता और राजनीति की सही समझ मिश्र जी में दिखायी देती है। इसके बावजूद तटस्थ रहकर अपने विचारों को व्यक्त करने की एक चिकित्सक वृत्ति है। वह किसी एक पक्ष के बारे में नहीं सोचती। इसीसे मिश्र जी को और भी अधिक श्रेष्ठ साहित्यकार का सम्मान देती है। मिश्र जी ने ऐतिहासिक शैली को अपनाया है।

4.12.5 **आत्मकथात्मक शैली**

'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास में मिश्र जी ने विविध शैलियों का प्रयोग किया है। इन्हीं शैलियों के कारण उपन्यास का शिल्प तांत्रिकता की कसौटी पर खरा उतरता है। तांत्रिक दृष्टि से वह स्पृहनीय और कौशल के ढंग को सामने लाता है। इस उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली का भी प्रयोग किया हुआ दिखायी देता है। उपन्यास के प्रमुख पात्र राजन के माध्यम से, सन्नी जोगेश्वरी आदियों द्वारा आत्मकथनात्मक शैली का रूप नज़र आता है।

''आत्मकथात्मक उपन्यास को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता हैं। एक प्रकार के उपन्यास में संपूर्ण कथा उनके प्रधान नायकों के मुख से कहलाई जाती है अर्थात कथा कहने वाला एक व्यक्ति होता है। दुसरे प्रकार के उपन्यासो में सभी पात्र अपनी कहानी अपने-अपने मुख से सुनाते है। अर्थात कहानी कहने वाले एक से अधिक व्यक्ति हैं और तीसरे प्रकार के उपन्यास ऐसे होते हैं जिनमें अधिकांश कथा तो प्रधान नायक द्वारा ही कही जाती है परअन्य पात्रों के जीवन की वे घटनायें जो नायक की जानकारी से परें है, उन्हीं पात्रों द्वारा वर्णित होती है, अर्थात कथा कहने वाला प्रधान व्यक्ति एक से अधिक व्यक्तियोंके सहयोग से कथा को विस्तार एवं पूर्णता प्रदान करते हैं। आत्मियता की सृष्टि

करने तथा प्रभावपूर्ण भावमय-चित्रों के निर्माण के लिए उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में आत्मकथात्मक उपन्यास शैली सर्वोत्तम कही जा सकती है।''[40] पीछे छुट गए राधेलाल अपने में से कुछ टूटे से। माँ को नाराज कर दिया-जो वे कभी करना नहीं चाहते। उन्हें मालूम है माँ ने कैसे पग-पग पर पिता द्वारा दी गई यातनाएँ झेली, उनकी कमियों के ऐवज अपने भीतर नई-नई खूबियाँ उभारी, ''राधेलाल को अक्सर ताज्जुब है माँ को देखकर - गाँव की यह करीब-करीब अनपढ़ महिला, प्रतिभा की कितनी बर्बादी ... कितनी छोटी महत्वाकांक्षा रही माँ की !''[41]

इस तरह के लेखन से मिश्र जी आत्मकथात्मक शैली को पात्रों के मन में उत्पन्न होनेवाले विचारों द्वारा प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास के अन्य पात्रों के द्वारा मिश्र जी ने आत्मकथात्मक शैली का उपयोग किया है। ''कमला ने खुद को मना लिया - अब चढ़ाव में वह है नहीं, साथ ही चाहिए तो वह चौबिसो घंटो का क्यों हो, कभी-कभी का क्यों नहीं ?दो व्यक्तियों का प्रेम एक बसे-बसाए घर को आग क्यों लगा दे ?बच्चो के लिए भी मन मार लिया क्योंकि दोनो ही नहीं चाहते थे कि उनके प्रेम से उत्पन्न सन्ताने कोठे के जीवन को अभिशप्त हो।''[42]

उपन्यास की पात्र कमलाबाई के मन के विचारों को प्रकट करते मिश्र जी ने उसके सुशिल मन को और सामाजिक नियमों का पालन करनेवाली कमलाबाई के साफ-सुथरे प्यार के लिए योगदान देनेवाले व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है।

'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास के पात्र सन्नी के मन की बातें इसप्रकार है - ''माँ जोगेश्वरी नहीं है अब, पर बनारस में उनकी चिड़चिड़ाहट के सामने फिर जा खड़े होने का मन करता है।'' उसी तरह राजन के मन के विचार इस प्रकार बताये है। ''राजन सोचने लगा था कि उसका प्रेम पति से ही शुरु होता है और वहीं समाप्त हो जाता है .... बच्चों की बात दीगर थी, हालाँकि बात वहाँ भी वही थी - ये मेरा, ये अपना, ऐसा लगता था कि इनके अलावा उसके यहाँ प्रेम के कोई और मायने नहीं थे।

मोहन के मन की बातों को वे इसप्रकार बताते हैं ''अपने आपको लेकर मोहन की आँखो में आँसू आ गए-एक घर भी नहीं। क्या किया उन्होंने जीवन में, बस दफ्तर का काम, सुबह काम, शाम काम, अगले रोज फिर काम। अपने कामों का कोई ध्यान नहीं।

पूरी ईमानदारी से जो जीवन काटा तो उससे भी क्या मिला - मुट्ठी भर यश जो रिटायर होते ही हवा के एक झाँके में उड़ गया।''[43]

इसी प्रकार मिश्र जी ने पात्रों के माध्यम से उनके मन में उठनेवाले आत्मिक भावों को आत्मकथा को प्रस्तुत किया है। पात्रों के मन में उठनेवाले विचार तरंगो को बताया है। डॉ. तिवारी जी इस उपन्यास संबंधि कहते हैं - ''यह उपन्यास हमें आज की भोगवादी आत्मकेन्द्रीत मानसिकता के परिणतियों के प्रति आग्रह भी करता है जिसके कारण आज की पीढ़ी अपनी जड़ कटकर धुरीहीन जीवन की त्रासदी का अभिशाप भोग रही है।''[44]

मिश्र जी ने विविध शैलियों के साथ-साथ आत्मकथात्मक शैली का भी उपयोग किया है। प्रत्यक्षत: तो पात्र अपनी कथा नहीं कहता है। किंतु उसके मस्तिष्क में उठनेवाले हर भावों को जब मिश्र जी चित्रित करते हैं तो मात्र स्वयं अपने अंर्तमन की बात को कथित करते हुए नजर आते है।

4.12.6 **पत्रात्मक शैली -**

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में मिश्र जी ने पत्रात्मक शैली का उपयोग भी किया हुआ दिखायी देता है। जिसके कारण उपन्यास और भी अधिक रोचक और विविध शैलियों से परिपूर्ण लगता है। उपन्यास में पत्र एक व्यक्ति के भी हो सकते हैं और किसी दूसरे पात्र को अपने कुछ विचार बताने के लिए पत्रात्मक शैली को अपनाया जाता है। जैसे उपन्यास का कोई भी पात्र पत्रोद्वारा अपने विचारोंको प्रकट करना चाहता है। इस उपन्यास में इस तरह का प्रयोग किया हुआ दिखायी देता है, जैसे -

''प्रिय राजन भैयाजी को वाराणसी से नीरजप्रसाद 'छोटे' का प्रणाम। समाचार यह है कि कार्तिक सुदी .... दिनांक ..... को प्रात:काल पाँच बजे हमारी माताजी, पूजनीया करूणावती (नइकी चाची) का स्वर्गवास हो गया। शुद्धि .... और तेरहीं .... को हैं।''[45]

उपन्यास के कथानक का एक मोड़ या एक पात्र के जीवन की समाप्ति को बताने के लिए मिश्र जी ने पत्रात्मक शैली का उपयोग अत्यंत सहजता से और स्वाभाविकता से किया है।

राजन द्वारा भैय्या भाभी को खत लिखना ''अभी-अभी नतीजा अखबार में देखा है। मुझे सबसे पहले आप दोनों की याद आई। और मैं पोस्ट ऑफिस की बैंच पर बैठा आपको पत्र लिख रहा हूँ। मैं आज यहाँ पहुँचा हुँ, आप दोनों की वजह से ही।''[46] इस प्रकार के लेखन के माध्यम से पात्रों को बढ़ावा देते हुए और एक पात्र द्वारा दूसरे पात्रों का उल्लेख करते हुए इन पात्रों की जीवन गाथाओं को नए अंदाज के साथ प्रस्तुत करते हुए उपन्यास को विकसीत करने का कौशल्य दिखायी देता है।

मिश्रजी ने शिल्प को सही आकार प्राप्त करने के लिए उत्तम शिल्प के लिए आवश्यक सभी सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों की ओर ध्यान दिया है। विविध शैलियों का प्रयोग करके शिल्प को और अधिक प्रभावपूर्ण बनाया है।

निष्कर्ष :

'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास का अनुशीलन करने के लिए इस उपन्यास की विविध प्रकार से समीक्षा करना आवश्यक हो जाता है। उपन्यास का शिल्पगत अनुशीलन करने के लिए शिल्प से संबंधित उन सभी बातों का जिक्र इसमें किया गया है। लेखक या साहित्यकार के लेखन तंत्र का अभ्यास करने के लिए शिल्प के सही अनुमान लगाने पड़ते है। लेखक से निर्मित कृति में तांत्रिकै कौशल्य देखने के लिए शिल्प के विविध प्रकारों में उसे समाविष्ट किया जा सकता है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का शिल्पगत अनुशीलन करने के लिए शिल्प संबंधित सभी नियमों और व्याख्याओं के साथ इसे जोड़ने का प्रयास किया है। इस दृष्टि से 'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास एक बेज़ोड कलाकृति के रूप में उभर आता है। शैल्पिक सौन्दर्य के कारण ही रचनाकार की कृति अधिक आकर्षक बन जाती है। इस अध्याय में शिल्प का अर्थ, शिल्प का स्वरूप, शिल्प की परिभाषा बतायी गयी है। उपन्यास की शिल्पविधि बताकर 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में समाविष्ट भाषा के विविध रूपों को बताने का प्रयास किया है। शिल्प के विविध अंगों को बताते समय उपन्यास में आए, तत्सम, तद्भव, आँचलिक, अंग्रेजी और विदेशी शब्दों को प्रयुक्त किया है। शिल्प को और भी अधिक समृद्ध बनाने के उद्देश्य से उपन्यास में समाविष्ट मुहावरें, अलंकारिक वाक्य, लोकोक्तियाँ, सुभाषित आदि भाषा के विविध प्रकारों को बताया है।

शिल्पगत अनुशीलन करने के लिए 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के

भाषा के बारे में बताने के बाद उपन्यास के तत्वों के अनुसार शिल्प की विविधता को बताया है। जैसे कथावस्तु, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, देशकाल और वातावरण उद्देश्य, भाषा तथा शैली आदि महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख किया है। विविध शैलियों में वर्णनात्मक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, ऐतिहासिक शैली, आत्मकथात्मक शैली, पत्रात्मक शैली आदि का विवरण देकर 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का शिल्पगत अनुशीलन अधिक से अधिक तंत्र पर आधारित बनाने का प्रयास किया है।

मिश्र जी लिखित इस उपन्यास में एक बात तो स्पष्ट हो जाती है शिल्प की दृष्टि से यह उपन्यास अत्याधिक सराहनीय बन पड़ा है।

* * * *

संदर्भ

क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	पृष्ठ सं.
1	डॉ. शंकर वसंत मुद्गल	हिन्दी के महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्प-विधि	17
2	डॉ.त्रिभुवन सिंह	हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	240
3	डॉ. शंकर वसंत मुद्गल	हिन्दी के महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्प-विधि	19
4	वही	वही	19
5	डॉ.त्रिभुवन सिंह	हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	
6	चुघ सत्यपाल	अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्प-विधि	17
7	डॉ.चन्द्रकांत बांदिवडेकर, सं.डॉ.उर्मिला शिरीष	गोविन्द मिश्र का औपन्यासिक संसार	45
8	Oxford	Oxford Dictionary of Current English	1258
9		बृहत् हिंदी कोश	1334
10	डॉ.त्रिभुवन सिंह	हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	241-242
11	डॉ.शंकर वसंत मुद्गल	महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्प विधि	20
12	डॉ.उर्मिला शिरीष डॉ.चन्द्रकांत बांदिवडेकर	सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र	45
13	कुसुम शर्मा	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास विविध प्रयोग	155
15	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	4,11,12,13, 14,19,24,25.
16	वही	वही	114,115, 118,141

			142,151,162,163
17	वही	वही	3,5,7,8,9,12 15,86,87,110,131
18	वही	वही	3,5,9,22,23,
19	वही	वही	12,25,27
20	वही	वही	21,27,43,44, 57,130.
21	डॉ.वसंत शंकर मुद्गल	महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्पविधि	22
22	डॉ.उर्मिला शिरीष डॉ.रामजी तिवारी	सृजनयात्रा : गोविन्द मिश्र	75
23	डॉ.शंकर वसंत मुद्गल	महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्पविधि	
24	डॉ.रामजी तिवारी डॉ.उर्मिला शिरीष	सृजनयात्रा : गोविन्द मिश्र	74,75
25	डॉ.शंकर वसंत मुद्गल	महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्पविधि	
26	डॉ.त्रिभुवन सिंह	हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	141
27	डॉ.शंकर वसंत मुद्गल	महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्पविधि	28
28	वही	वही	30

29	डॉ. प्रेमशंकर	मोहभंग का दारूण दस्तावेज- पाँच आँगनों वाला घर	
30	डॉ.त्रिभुवन सिंह	हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	96,97
31	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	11
32	डॉ.त्रिभुवन सिंह	हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	155
33	डॉ. प्रेमशंकर	साक्षात्कार जनवरी 99	106
34	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	
35	डॉ.त्रिभुवन सिंह	हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	205
36	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	55
37	वही	वही	58
38	डॉ. प्रेमशंकर	साक्षात्कार जनवरी 99	108
39	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	74
40	डॉ.त्रिभुवन सिंह	हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	101-2
41	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	20,21
42	वही	वही	81
43	वही	वही	119
44	डॉ.उर्मिला शिरीष	सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र	76
45	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	109
46	वही	वही	